त्रिविक्रम विष्णु मूर्तियां - इस दृश्य में विष्णु द्वारा तीन पग में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को नाप लेने की घटना को दिखाया गया है। विष्णु का सीधा पैर पाताल में है। जहां हारे हुए राक्षस बैठे हैं। उनका बायां पैर सीधा आकाश में तना हुआ है। जहां सूर्य चन्द्र तथा त्रिशंकु बने हैं। उनके बायें पैर के अंगुठे की ब्रह्मा व शिव वन्दना कर रहे हैं। इस दृश्य के मध्य में विष्णु की आकृति स्वर्ग से पाताल तक सम्पूर्ण ~~एक~~ ब्रह्माण्ड को साधने वाले एक स्तम्भ का भी संकेत दे रही है। यह दृश्य आदि वराह मण्डप में है।

महिषासुर मर्दिनी -

यह दृश्य भी महिष-मर्दिनी मण्डप की दाहिनी दीवार पर उत्कीर्ण है। भयंकर मुखाकृति वाले सिंह पर आरूढ़ अष्ठ भुजी दुर्गा के हाथों में विभिन्न आयुध हैं। उनके पीछे अनेक गण हैं। जो अलग-अलग प्रकार के अस्त्र लिए हुए हैं। सामने महिष के मुख तथा मनुष्य के शरीर वाला महिषासुर हाथ में गदा लिये बचाव की मुद्रा में है। अन्य साथी राक्षसों को साथ भागने की मुद्रा में है। इस दृश्य में अपूर्व गति है। दुर्गा की आकृति भी वीरता पूर्ण भाव युक्त अंकित की गयी है। इस दृश्य में जहां देवी दुर्गा के ऊपर एक गण छत्र लगाये दिखाया गया है।

अर्जुन की तपस्या या गंगावतरण - पल्लव शासकों ने सातवीं शती के मध्य महाबलीपुरम के सागर तट के निकट विशाल चट्टानों में से एक खड़ी चट्टान पर खुले आकाश के नीचे एक चट्टान अत्यन्त प्रसिद्ध दृश्य को उत्कीर्ण कराया। एकदम सीधी खड़ी चट्टान के बीच में एक दरार है। जो जलप्रपात के गिरने से बन जाती है। इसके बाँयी तथा दाहिनी ओर की चट्टानों की प्राकृतिक भित्ति पर सैकड़ों आकृतियों वाला एक दृश्य खोदा गया है। कला विद्वानों ने इस दृश्य को अर्जुन की तपस्या कहा है।

यह 98 फुट लम्बी और 43 फुट चौड़ी विशाल खड़ी चट्टान पर काटा गया है। अर्जुन तपस्या कर रहे हैं। अनेक

Scanned with CamScanner

देवता और सांसारिक प्राणी तथा पशु आदि भी तपस्या में निमग्न हैं। इसका एक-एक अंश इतना महत्वपूर्ण है कि देखने से तृप्ति नहीं होती है। दोनों ओर पर्वतीय चट्टानी किनारे और बीच की गहराई में पहले नागराज फिर नागी और सबसे नीचे फन फैलाये एक सर्प का अंकन है। नागों का जल से सम्बंध माना गया है। अतः इन सर्पाकृतियों द्वारा गंगा की धारा को प्रस्तुत किया गया है।

देवी-देवताओं के अतिरिक्त यहां अनेक सुन्दर पशु आकृतियां भी उत्कीर्ण इस दृश्य में अंकित हाथी-नाग हंस तथा कच्छप बड़ी ही वास्तविकता से उभारे गये इनके अतिरिक्त एक बिल्ली भी ऊपर हाथ उठाये तपस्यारत दिखायी गयी है। एक शिला खण्ड पर एक मादा वानर अपने शिशु को दुध पिलाती दिखायी है। उसके पीछे वानर बैठा है जो मादा के जूं बीन रहा है। ग्रेनाइट पत्थर से निर्मित यह बड़ी ही स्वाभाविक प्रतिमा है। जो चारों ओर से देखी जा सकती है। इस समय यह मद्रास संग्रहालय में सुरक्षित है। पूरे दृश्य में न तो शिव की आकृति है और न जल की धारा में गंगा की आकृति है। अतः इस दृश्य को "गंगावतरण" से जोड़ना युक्ति पूर्ण प्रतीत नहीं होता है।

डा० पूर्णिमा वाशिष्ठ
ललित कला विभाग

Scanned with CamScanner